मानव अधिकारक विश्वव्यापी घोषणापत्र १९४८

प्रस्तावना

विश्वक मानुष परिवार सवक सवै सदस्यसवक मनञँ लाग्ल प्रतिष्ठा, समानता र अहरणीय अधिकारसवक सम्मानक लागी स्वतन्त्रता, न्याय र शान्ति आधार भैल गुनेइ,

मानव अधिकारसवक अवहेलना र उपेक्षाक परिणाम स्वरुप मानुषसवक विवेकके नै आघात पुग्लार जस्न बर्बरता पुर्ण कामसव भैल गुनेइ र मानुषसवके निर्धक्क भैकुनु आफ्न आस्था र वाक स्वतन्त्रताक उपभोग करिके पाउलाह्न सर्वसाधारण जन्ताक उच्चतम आकांक्षा भैलगुनेई,

अत्याचार र दमनक विरुद्ध अन्तिम उपाएक रुपयँ विद्रोह करिके मानुसवके वाध्य नाईकरिके कहिकुन कानुनक शासनसे मानुसक अधिकारक संरक्षण करिके अत्यावश्यक भैलगुनेई,

राष्ट्रसबक बिच मैत्रीपूर्ण सम्वन्ध अभिवृद्धि करिके आवश्यक पोरलगुनेई,

संयुक्त राष्ट्रसंघक जनता सभेई वडापत्रञं मानुसवक मौलिक अधिकारसव र मानुसक प्रतिष्ठा तथा वेटा र वेटी विच समान अधिकारसंव कहिकुनु बडक स्तन्त्रत्राका साधिन सामाजिक प्रगति र जीवन स्तर वाढाईके लागि दृढ संकल्प करलगुनेई,

सदस्य राष्ट्रसवभेई संयुक्त राष्ट्रसंघक सहयोगञं मानुसक अधिकारसव र मौलिक स्वतन्त्रता पाईकुनु विश्वव्यापी सम्मान ,पालना र प्रवर्द्धन करिके प्रतिज्ञा करल गुनेई,र यी अधिकार र स्वतन्त्रता पुर्ण पाईकेलागी समान समझदारी भैके महत्वपुर्ण भैलगुनेई,

महासभाई सवै जनतासव र सवै राष्ट्रसभेई हासिल कर्लाह्न एक साझा मापदण्डक रुपञं यस मानुससवक अधिकारसवक विश्वव्यापी घोषणापत्र घोषणा करित र यस उदेश्यक लागी प्रत्येक व्यक्ति र समाजक प्रत्येक अंगसभेई ईय घोषणापत्रके निरन्तर ध्यानञं राखीकुन शिक्षण र शिक्षाक माध्यमसे ईय अधिकार र स्वतन्त्रतासव प्रति सम्मान वाढाईके, राष्ट्रिय तथा अन्तराष्ट्रिय स्तरञं, सदस्य राष्ट्रक जनतासव बीच, उसवक क्षेत्र र अधिकार अर्न्तगत उअ अधिकारसबक सम्मान र पालना करिके प्रयत्न रहलाह्न विश्वास लेलवाटै ।

धारा १

सवै मानुससब प्रतिष्ठा र अधिकारक आधारञं जन्मजात स्वतन्त्र र सम्मान भैताहात । उनेन्सब बुद्धि र विवेक लेईकुनु ऐल भैताहातसब र एक अर्कासे भातृत्वक व्यवहार करिके परित ।

धारा २

जाति,वर्ण,लिगं, भाषा,धर्म,राजनैतिक वा अन्यविचारधारा, राष्ट्रिय वा सामाजिक उत्पति, सम्पति, जन्म वा अन्य कुनै हैसियत जस्न कलौ फेरि आधारञं कलौफेरि किसिमक भेदभाव विना प्रत्येक व्यक्तिके यस घोषणापत्रञं उल्लेखित अधिकार र स्वतन्त्रतासवक अधिकाकार भईत । ईक्र अतिरिक्त राजनितिक,क्षेत्रधिकार या अन्यत्र देश वा क्षेत्रसे सम्वन्धित व्यक्ति, कलौफेरि स्वतन्त्र, संरक्षित, स्वसाशन रहित वा वाहारक सत्ताद्वारा शासित देश कलाह्न जहिन कलौफेरि आधारञं भेदभाव नाईकारिहि ।

धारा ३

प्रत्येक मानुससवक जिवन स्वतन्त्रता र सुरक्षाक अधिकार भईत ।

धारा ४

कखाउकेफेरि बधुवा वा दास बानाई राखिके नाईपाहि । कलौफेरि प्रकारक दासत्व र दास व्यापारके पुर्णरुपञ निषेध कर्लवाटै ।

धारा ५

कलौफेरि व्यक्तिके शारीरिक यातना देलाइ वा क्रुर अमानविय वा अपमानजनक व्यवहार वा सजाय निजदेलाइ ।

धारा ६

सभैकानुनक दृष्टिञ प्रतेक मानुसके मानुसक रुपञ मान्यता पाउलाइ अधिकार भईत ।

धारा ७

सभै मानुससब बिना भेदभाव कानुनक दृष्टिञ समान भैताहातसव र कानुनका आधारञ सभैके समान व्यवहार भईत । सभै मानुससबके यस घोषणा पत्रक उल्लघन, वा अन्य कुनै पनि प्रकारक भेदभाव वा कलौकिसिमक भेदभ वा कलौकिसिमक भेदभक लागि उत्तेजित करलाइ विरुद्ध कानुनक समान संरक्षण पाउलाइ अधिकार भईत ।

धारा ८

सभै मानुससवके संविधान वा कानुनद्धारा प्रद्धत मौलिक अधिकारक उलघंन कर्लालाइ कार्यसव विरुद्ध सक्षम न्यायालयवाट प्रभावकारी उपचार पाउलाइ अधिकार वाटै ।

धारा ९

कखाउके फेरि स्वच्छाचारी ढंगसे गिरफ्तार कर्लाइ, नजरचन्दञ राख्लाइ वा देश निकाला नाई करिके ।

धारा १०

प्रत्येक व्यक्तिसबक निज उप्र लागेाल फौजदारी अभियोग वा निजक अधिकार र दायित्वक निरुपण कर्तेखना स्वतन्त्र र सक्षम न्यायालयञ समानढंगसे निष्पक्ष र सार्वजनिक सुनवाई करिके पाउलाइ अधिकार भईत ।

धारा ११

(१) दण्डनीय कसुरक अभियोग लाग्ल प्रत्येक व्यक्तिसबके सार्बजनिक सुनवाईञ आफ्न प्रतिरक्षाक निम्ती आवश्क प्रमाणसव करिके र कानुन बमोजिम दोषि प्रमाणित नभएसम्म निदोष हुने अधिकार बाटै भईत ।

(२) कलौ मानुषके काम करतेक बखत राष्ट्रिय वा अन्तराष्ट्रिय कानुनै दण्डनीय कसुर नठहरेल कामके त्यस्ता काम कर्लाह्न कलौफरि मानुषके दण्डनीय कसुरक दोषि प्रमाणित करीकुनु सजायं नाईकरिके । र सोदण्डनीय कसुर कर्तेक बखत लागू कर्ल सजाय कहतेफेरी बढी सजाय फेरी कर्लाह्न नीज ।

धारा १२

कलौफेरी व्यक्तिक गोपनियता; परिवार ,घर वा पत्र व्यवहार स्वच्छाचारी वा गैरकानूनी हस्तक्षेप नाईकरीके । र निजक प्रतिष्ठा तथा ख्यातीजं फेरी गैरकानूनी आक्रमण करीके नीज पाउलाह्न । र निजक प्रतिष्ठा तथा ख्यातिजं फेरी गैरकानूनी आक्रमण करीके नीज पाउलाह्न । प्रत्येक मानुषके ओस्न हस्तक्षेप वा आक्रमण विरुद्ध कानूनसे सम्रक्षण पाउलाह्न अधिकार भईत ।

धारा १३

१. प्रत्येक व्यक्तिके आफ्नो देशक सिमाना भित्र आवत जावत करीके तथा बसोवास करिके पाउलाह्न स्वतन्त्रताक अधिकार भईत ।

२.प्रत्येक व्यक्तिके आफ्नो देश या अन्य कोलौफेरी देश छाडिके पाउलाह्न र आफ्न देश फर्किके पाउलाह्न अधिकार भईत ।

धारा १४

१. प्रत्येक व्यक्तिके अत्यचार र उत्पीडनसे बाचिके कलौफेरी देशजं आश्रय पाउलाह्न अधिकार भईत ।

२. गैर राजनीतिक अपराधसब वा संयुक्त राष्ट्रसंघक उद्धेश्य र सिद्धान्तसव विरुद्धक कामसवसे वास्तविक रुपजं उत्पन्न मुद्धासबजं कले यी अधिकारक उपभोग करिके नाई पाहि ।

धारा १५

१. प्रत्येक मानुसके राष्ट्रियताक अधिकार भईत ।

२. कलौफेरी मानुसके स्वच्छाचारी ढंगसे उक्त राष्ट्रियतासे वन्चित नाईकरिके , कनेसित कलौफेरि मानुसके राष्ट्रियतासे परिवर्तन करिके वन्चित नाईकरिके ।

धारा १६

१. उमेर पुग्ल बेटा तथा बेटीसबके जाति, राष्ट्रियता वा धर्मक वन्देज विना विवाह करिकुन परिवार वोसालाह्न अधिकार भईत । उसबके विवाह कर्ते खनाक बखत, वैवाहिक सम्बन्ध रहते खनाक सम्बन्ध र विवाह विच्छेदका वखत समान अधिकारसब पाउताही ।

२. वर र वधु दुहोइक स्वतन्त्र तथा पूर्ण मन्जुरीजं मांत्रै विवाह सम्पन्न करिके सकाईत ।

३. परिवार समाजक प्राकृतिक तथा आधारभुत इकाई हखै । उहैगुनेई परिवाररै समाज तथा राष्ट्रसे संरक्षण पाउलाह्न अधिकार राखित ।

धारा १७

१. प्रत्येक व्यक्तिके आफ्नो व्यक्तिगतक साधिन अन्यव्यक्तिसबक संलग्नताज सम्पति राख्लाइ अधिकार भईत ।

२. कलौफेरी मानुसके स्वच्छाचारी ढंगसे निजक सम्पतीक माटे वन्चित नाईकारीके ।

धारा १८

प्रत्येक व्यक्तिके आफ्न विचार राख्लाइ, विवेक प्रयोग करिके तथा धर्मक स्वतन्त्रताक अधिकार भईत । इक्र अन्तर्गत उही आफ्न रोज्ल धर्म वा आस्था परिवर्तन करिके स्वतन्त्रता , व्यक्तिगतरुपसे वा अरुसे मिलिकुन, सार्वजनिक वा निजि रुपमा पूजाआजा कर्लाइ स्वतन्त्रताक साधिन,आफ्न धर्म मान्लाइ, आफ्न धर्म सिखालाइ,आस्था प्रकट कर्लाइ,पूजाआजा करिके पाउलाइ स्वतन्त्रासब आदि पोरित ।

धारा १९

प्रत्येक व्यक्तिके विचार र अभिव्यक्ति स्वतन्त्रताक अत्रिकार भईत । इय अधिकार अन्तरगत विना हस्तक्षेप आफ्ना विचारसव राखिके पाउलाइ स्वतन्त्रता, सिमानाक बन्देज विना कलौफेरि माध्यसे सूचना र विचारसब प्राप्तकरिके, खोजिके तथा प्रसार करर्लाइ समेत पोरित ।

धारा २०

१. प्रत्येक व्यक्तिके शान्तिपूर्वक सभाकरिके र संगठन खोल्लाइ स्वतन्त्रताक अधिकार भईत ।

२. कलौफेरि व्यक्तिके कलौफेरि संगठनज संलग्न भैके बाध्य काराईके नाईसकिहि ।



धारा २१

१) जम्मै जेनाक प्रत्यक्ष वा स्वतन्त्र रुपञ छानिल प्रतीनिधी सबभेई आफ्नो देशक सरकारञ भाग लेईके पाउलाहार अधिकार भईत ।

२) जम्मै जेनाक आफ्नो देशक सर्वजनीक सेवाञ बाराबर पहुच पाउलाहार अधिकार भईत ।

३) सरकारक शासन चालाईके आधार सभै जेनाक ईच्छा भईके परित ।

धारा २२

समाजक सदस्यक हैसियतञ सभै जेना सामाजीक सुरक्षाक अधिकार भईत , उक्र साङ्घिन जम्मै जेना राज्यक राष्ट्रिय प्रयास वा बाहारदेशक सहयोगसे तथा प्रतेक देशक श्रोत साधान अनुशार उक्र प्रतिष्ठान र स्वतन्त्र व्यत्तीक बिकाशक लागी धेरैनै , नभई निज भईलाहार आर्थिक,सामाजीक र सांस्कृतीक अधिकार उपभोग कर्लाहार अधिकार भईत ।

धारा २३

१) प्रतेक जेनाक काम कर्लाहार आफ्नै मनसे जागिर रोजीके र काम करिके लागी अनकुल मिलाईके र जागिर निजोपाउँलाहारके हेरबिचार कर्लाहार अधिकार भईत ।

२) प्रतेक जेनाक किहाउ फेरी भेदभाब नराखीकुन बराबर कामको लागी बराबर परिश्रमीक पाउलाहार अधिकार भईत ।

३) काम करलाहार प्रतेक ब्यक्तीक आफ्नाहुर परिवारको लागी मानुष्क ईजेत र जिवनचालाईके बन्दोवस्तक लागी उचित अनुसारक परिश्रमीक पाईके र आवश्यक भईने सामाजीक रेखदेख तथा अरु उपायसे भरपुर कारीके अधिकार भईत ।

४) प्रतेक जेनाक आफ्नो हितक लागी ट्रेड युनियन खोलीके पाईत र उछिका साङ्घीन मिसिके फेरी पाउलाहार अधिकार भईत ।

धारा २४

प्रतेक मानुष्क रामकामक समय र सिमा र तलब सहितक उ समयक बिदा सहित बिश्राम करलाहार र फुर्दक अधिकार भईत ।



धारा २५

१) प्रतेक जेनाक आफ्निक र आफ्निक परिवारको स्वास्थ र कल्याणक लागी खईलाहार कुरा, कपडा , बोस्लाहार तथा विरोउ सवक सुविध र आवश्यक पर्ने समाजक सेवा सहित राम्रो खालक जीवन यापन कार्लाहार अधिकार भईत । उक्र साङ्घिन जागिर निजोपाउल, बिरामी भईल, किहाउ करीके निजो सक्लाहार , विधुवा, बुढेसकाल, वा करिके निजो सक्लाहार अरु अवस्थाञ साधंन र श्रोतक अभावञ जीवन चालाईके गाह्रो भईनेसित सुरक्षाक अधिकार भईत ।

२) आमाक र भखरै जर्मल छाहोक छाहिक धेरै हेरचाहा र सहयाता पाउलाहार अधिकार भईत ।विहा भईकुन वा नभईकुन पाउल केटा कटी संबक बराबर सामाजीक संरक्षण उपभोग करिके पाउलाहार अधिकार भईत ।

धारा २६

१) प्रतेक जेनाक शिक्षाक अधिकार भईत । कम्तिय पुनु सुरुक र आधारभुत शिक्षा नि:शुल्क भईके परित । सुरुक शिक्षा अनिवर्य भइके परित । प्राविधिक र व्यवसायीक शिक्षा सभईके सजिलै पढिकेपाईके परित र उच्च शिक्षाक योग्यताक आधारञ सभईके बाराबाररुपञ भईके परित ।

२) शिक्षा मानुष्क सभई विकाशक र मानुष्क अधिकार तथा मौलिक स्वतन्त्र र सम्मानके सुधारीके तर्फ देखाईके परित । शिक्षायाई सभई राष्ट्र जात र धर्मक समुहसभक माझ समजदारी, सहिष्णुता र साङ्घाती बानाईके र संयुक्त राष्ट्रसंघक शान्ती कायम करिके प्रयासके अगाडी बाढाईके सहयोग करीके परित ।

३) आफ्नो बच्चा बच्ची सबके देलाहार शिक्षा रोज्लाहार पहिले अधिकार आमाक र बुबाहाक भईत ।

धारा २७

१) प्रत्येक जेनाक आफ्नो समाजक साँस्कृतीक जिवनञ स्वतन्त्ररुपञ सहभागी भएेके , कला उपयोग करिके र



बैज्ञानीकक तथा यस्न उपयोगक फाईदासब उपभोग कर्लाहार अधिकार भईत ।

२) प्रतेक जेनाक उक्र रचना वा सिर्जना कर्ल किहाउ फेरी वैज्ञानीक , साहित्यीक वा कलात्मक कृती सें प्राप्त भईल नैतीक र भौतीक फाईदासबक बाचाई राखीके अधिकार भईत ।

धारा २८

प्रतेक व्यक्तीक यिहई घोषणा पत्रञ उल्लेख भईल अधिकार र स्वतन्त्ररुञ प्राप्त करीके सामाजीक र अन्तराष्ट्रिय व्यबस्थाक अधिकार भईत ।

धारा २९

१) प्रतेक व्यक्तीक आफ्नो समाज प्रती दायीत्व भईत । यस्न समाजञ बसिकुन मात्र व्यक्तीक स्वतन्त्रता र सभईजेनाक विकाशक सम्भावना भईत ।

२) आफ्न अधिकार र स्वतन्त्रताक उपभोग कर्ते खना प्रतेक जेनाई अरुक अधिकार र स्वतन्त्रताक आदर करिके परित र प्रजातान्त्रीक समाजक नैतिकता , सावर्जनीक व्यवस्था र सर्वसाधारणक कल्याणक लागी चाहालाहार उचित आचश्यकतासब हासिल कर्ते खना कानुनसे निर्धारीत सिमा भित्र रहिके परीत ।

३) यस्न अधिकार र स्वतन्त्रता सब संयुक्तराष्ट्र संघक सिदान्त र उदेश्यसब पारित भईरहलाहार करिकुन कल्होउ फेरी हालतञ उपभोग करिके नापाही ।

धारा ३०

कल्हउ राष्ट्र , वर्ग वा व्यक्तीई ईय घोषणापत्रञ उल्लेख भईल अधिकार र स्वतन्त्रा सबके किठाराघात कर्लाहार उदेश्यसे वा वस्नकिसिमक काम करिके सक्लाहार करीकुन वा काम कर्लाहार करिकुन ईय घोषणा पत्रञ उल्लेख भईल अधिकार र स्वतन्त्रासबके व्यख्या करिके नापाही ।

(१० डिसेम्वर १९४८ ञ संयुक्त राष्ट्र संघक माहासभासे पारित ।)

३।८।६१

नेपाल दे उत्थान
समाज चिंतन